ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 52-55
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

नवाब अबुल मंसूर के समय चित्रकला, संगीत नृत्यकला

विपिन कुमार चौधरी
शोध अध्येता– मध्यकालीन इतिहास विभाग, मड़ियाहूँ पी0जी0 कालेज मडियाहूँ, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received-04.10.2023, Revised-10.10.2023, Accepted-15.10.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***अवध के सूबेदार सआदत खाँ उर्फ बुरहान–उल–मुल्क की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली के मुगल शासक मुहम्मदशाह ने मिर्जा मुहम्मद मुकीम को अवध का सूबेदार नियुक्त किया। अबुल मंसूर अली खाँ सफरदरजंग का मूल नाम मिर्जा मुहम्मद मुकीम था। सफदरजंग ने अवध में फैल रहें अशान्ति पर नियंत्रण स्थापित कर शान्ति व्यवस्था स्थापित की। अवध के प्रशासनिक कार्यों का सफलतापूर्वक संचालित किया। सफदरजंग अवध राज्य के साथ ही साथ दिल्ली की राजनीतिक गतिविधियों में भी सम्मिलित रहे। ये मुगल शासक के वजीर पद पर भी नियुक्त रहे। सफदरजंग के पश्चात् क्रमशः खानखाना इन्तजामुद्दौला और इमादुलमुल्क ने वजीर के पद पर कार्य किया। सफदरजंग ने नवीन रूप से फैजाबाद का विस्तार किया। सफदरजंग के शासनकाल में राजनीतिक उथल–पुथल की गतिविधियाँ इतनी अधिक थी कि सफदरजंग उसी में व्यस्त रहे। ललित कलाओं और साहित्य की प्रगति के लिए राज्य में शान्ति व्यवस्था की स्थापना बहुत ही आवश्यक है। सआदत खाँ और सफदरजंग के शासनकाल में अवध में राजनीतिक झंझावत का माहौल रहा। अवध नवाब सफदरजंग ने अवध की सीमाओं को सुरक्षित करने और उसके विस्तार की तरफ अधिक ध्यान दिया। सफदरजंग ने ललित कलाओं की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया, सम्भवतः इसका मूल कारण अवध सीमा क्षेत्र का विस्तार और उसे अराजकता मुक्त करना था। अवध के नवाबी शासन के प्रारम्भिक शासकों ने चित्रकला की तरफ अपना विशेष ध्यान आकर्षित नहीं किया।***

कुंजीभूत शब्द– अशान्ति, शान्ति व्यवस्था, शासनकाल, उथल–पुथल, ललित कलाओं, प्रगति, राजनीतिक झंझावत, अराजकता।

अवध नवाब सफदरजंग के शासनकाल में फैजुल्लाह का उल्लेख मिलता है, जो एक मुगल शैली का चित्रकार था। फैजुल्लाह को सफदरजंग ने अवध में अपने साथ लाया था। फैजुल्लाह एक उत्तम चित्रकार था। मुगल शासक मुहम्मदशाह ने सफदरजंग को कश्मीर का सूबेदार नियुक्त किया। कश्मीर में सूबेदारी करने के पश्चात् जब वह अवध आ रहा था, तो फैजुल्लाह को भी लेकर आया। फैजुल्ला अवध में आकर चित्रकारी का कार्य प्रारम्भ किया। उसने उन्हीं चित्रों की प्रतिकृतियाँ बनाई, जो उसके पास पहले से ही थे। ऐसा प्रतीत होता है कि मुगल शासन काल के चित्रों की प्रतिकृतियाँ बनाने का कार्य फैजुल्लाह द्वारा ही अवध में प्रारम्भ किया गया था। अब पुराने विषयों पर नवीन तरीकों से चित्र बनाना शुरू हो गया।

अवध के चित्रकारों में फैजुल्लाह का नाम अग्रणी है। उसने कश्मीर की सुन्दर वादियों में अपना जीवन व्यतीत किया था। वह मुगल शैली की चित्रकारी में सिद्धहस्त था उस पर कश्मीर के प्राकृतिक दृश्यों का प्रभाव अवश्य पड़ा होगा। सफदरजंग के साथ अवध में आकर उसने जो चित्र बनाये उस पर उसके बीते समय का प्रभाव अवश्य रहा होगा। उसने अवध में जो प्रारम्भिक चित्रकारी करना प्रारम्भ किया उसमें प्राकृतिक अंश किसी न किसी रूप में प्रयोग होना उचित प्रतीत होता है। किसी भी राज्य में ललित कलाओं के विकास हेतु यह आवश्यक है कि वहाँ का वातावरण शान्त और सुरक्षित हो। अवध नवाब सफदरजंग दिल्ली दरबार से लेकर अवध के राजनीतिक झंझावातों का सामना करने में अपना अधिक समय देते थे। सफदरजंग द्वारा फैजुल्लाह को अवध में अपने साथ लेकर आना यह सिद्ध करता है कि नवाब साहब की रूचि चित्रकला के प्रति तो थी, परन्तु स्वयं के द्वारा अवध की सीमाओं को सुरक्षित रखने के कारण इस तरफ कम ध्यान दे सकें।

अवध के शासकों के शासनकाल में चित्रकारों ने जो चित्रकारियाँ की है, वह मुगल चित्रकला के बहुत ही समीप है। दिल्ली के मुगल शासकों की चित्रकला केवल अवध क्षेत्र में ही नहीं, अपितु अन्य क्षेत्रों में व्याप्त थी। मुगलों का शासन भारत में एक लम्बें समय से और विस्तृत भू–भाग पर कायम था। आगे चलकर जब दिल्ली के मुगल शासक अपने साम्राज्य की सीमाओं और प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप देने में असमर्थ रहे, तो मुगल सूबेदारों ने अपने–अपने सूबों में स्वतंत्र शासक की भाँति शासन सत्ता चलाने लगे। मुगलों के साम्राज्य से स्वतन्त्र हुए सूबों में दिल्ली के कलाकारों ने जाकर इन राज्यों में शरण ली। दिल्ली के मुगल राजदरबार में जब रोजगार के अवसर घटने लगे, तो राजदरबार से सम्बन्धित कलाकारों के अपने जीविकोंपार्जन के साधन कम पड़ने लगे। मुगल कलाकारों ने अपने जीविका की तलाश में दिल्ली के मुगल राजदरबार से अपना मुँह फेर लिया और मुगल साम्राज्य से स्वतंत्र हुए सूबों की तरफ अपना ध्यान आकर्षित किया। मुगल राजदरबार छोड़कर जाने वाले कलाकारों ने मुगलों का राजदरबार छोड़ा कला नहीं, यही वजह रही कि मुगल चित्रकारों ने जिन नये राज्यों के दरबार में आश्रय प्राप्त किया, वहाँ भी उनकी चित्रकारिता में मुगल चित्रकारी का अंश झलकता है।

अवध राज्य भी मुगल चित्रकारिता से अछूता नहीं था। अवध के शासकों के समय में बने चित्र मुगल चित्रकारिता से बहुत सीमा तक मिलते है। मुगलों की चित्रकला से बहुत सामंजस्य रखने के बाद भी अवध की चित्रकला मुगल चित्रकला से उच्च नहीं है। मुगलों की चित्रकला से अवध के नवाबी शासकों की चित्रकला में कुछ भिन्नताएँ है। अवध के नवाबों ने अपने शासनकाल में अनेक बाग–बगीचों को लगवाया था। अपने समय में स्मारकों के निर्माण में भी बाग–बगीचों का ध्यान रखा है। भवनों के पास सुन्दर उद्यान लगाये जाते थे। खूबसूरत उद्यानों, सुगन्धित पुष्प के पौधों, दिखने में अच्छे लगने वाले पौधे का विशेष रूप से ध्यान दिया जाता था। इन उद्यानों में पक्षियों की चहचाहट की आवाजे आना स्वाभाविक थी। नवाबों के शासनकाल में चित्रकारों ने इस तथ्य का विशेष ध्यान रखा है, इन्होंने

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

अपने चित्रों में अवध नवाबों के पंसदीदा प्राकृतिक चित्रों का अंकन किया है। सुन्दर पुष्पों, उद्यानों, पक्षियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है। अवध के नवाबों को शिकार खेलने का शौक भी था। शासकों द्वारा शिकार खेलना बहुत ही प्राचीन समय से चला आ रहा है। अवध के क्षेत्र में शिकार करने का उल्लेख प्राचीन समय से ही प्राप्त होता है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि अयोध्या के राजा दशरथ एक बार शिकार के लिए जंगल में गये थे। उसी समय श्रवण कुमार भी अपने माता–पिता को तीर्थयात्रा कराने के उद्देश्य से लेकर निकले थे, जब उनके माता–पिता को प्यास लगा, तो वे पानी लेने चले गये। इसी समय राजा दशरथ द्वारा पशु के शिकार हेतु बाण छोड़ा जाता है, जो श्रवण कुमार को लग जाता है यह बात अवध के आमजन मानस में किसी न किसी रूप में सुनाई पड़ती है। श्रवण कुमार को मातृ–पितृ भक्त के नाम से जाना जाता है।

अवध के नवाब पूर्व में मुगल शासकों के दरबार से सम्बन्धित थे। सफदरजंग ने मुगल राजदरबार में वजीर के पद पर कार्य किया था। उसने भी मुगलों की शानों–शौकत देखी थी। मुगल शासक भी शिकार के प्रेमी थे। मुगलों से स्वतंत्र होने पर अवध नवाब शिकार करते थे। अवध के आमजन मानस में पशु–पक्षियों का युद्ध बहुत ही प्रिय था। अवध नवाब मनोरंजन के लिए पक्षियों का युद्ध देखना भी पसन्द करते थे।

अवध के चित्रकारों ने भी नवाबों के मन को आनन्दित करने वाले चित्रों को तैयार किया। चित्रकारों द्वारा शिकार और युद्ध के चित्र तैयार किये गये, जो नवाब के मन को अपने तरफ आकर्षित कर सके। सफदरजंग मुगल राजदरबार से जुड़े रहे और चित्रकार फैजुल्लाह मुगल शैली से जुड़ा रहा। वह अवध राजदरबार में आकर अपनी पुरानी शैली की कलाओं को भूल न सका। प्रारम्भ में वह मुगल शैली के चित्रों को तैयार किया। फैजुल्लाह चित्रकला के मुगल शैली से अपने को अलग नहीं कर सका, इसीलिए वह मुगल शैली में ही अवध में चित्रकारी करता रहा।

अवध के शासकों के समय प्रकृति का चित्रण बहुत ही मनोरम तरीके से किया गया है और 18वीं शताब्दी में इस प्रकार के चित्रण की संख्या अधिक है। इस समय जो विदेशी चित्रकार यहाँ पर आये, उनमें कुछ को प्रकृति चित्रण से बहुत ही लगाव था। भारत आने वाले विदेशी चित्रकारों में विलियम होजेज सन् 1744 ई0 में पधारे। यह एक व्यवसायिक चित्रकार थे जो प्राकृतिक सौन्दर्य के बहुत प्रेमी थे। प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रेमी अवध नवाबों के समय अवध में उनकी रूचि के अनुरूप चित्रकार भी रहने लगे। विलियम होजेज जब भारत आये तो उस समय अवध में सफदरजंग का शासन था।

यूरोपीय चित्रकारों का भारत के स्थानीय चित्रकारों पर प्रभाव बढ़ता जा रहा था। स्थानीय चित्रकार यूरोपीय शैली को सीखने में अपनी रूचि दिखा रहे थे। विलियम होजेज की तरह स्थानीय चित्रकार मीर कलन खाँ भी प्राकृतिक सौन्दर्य का बहुत प्रेमी था। अवध के प्रारम्भिक शासकों के शासनकाल में प्रकृति चित्रों को ही विशेष महत्व प्रदान किया गया है, इस समय के स्थानीय चित्रकार भी प्रकृति चित्रों में ही अपनी रूचि रखते थे। यूरोपीय चित्रकारों का आगमन जब अवध में समुचित संख्या में होने लगा तो उनमें से अधिकांश प्रकृति प्रेमी नहीं थे। स्थानीय चित्रकार मीर कलन खाँ अवध को ही अपना कार्यक्षेत्र रखा, इस समय उसने कई चित्र बनाये। यूरोपीय चित्रकारों के अवध में प्रवेश करने से यहाँ के स्थानीय चित्रकारों पर यूरोपीय शैली का प्रभाव दिखाई देता है। मीर कलन खाँ मुगल शैली का चित्रकार था। यूरोपीय शैली की चित्रकला ने मीर कलन खाँ को भी प्रभावित किया है। मीर कलन खाँ के चित्रों में मुगल शैली और यूरोपीय शैली का मिला–जुला रूप देखा जा सकता है।

अवध के चित्रकारों ने अपने चित्रों में मुगल शैली का प्रयोग किया है। दिल्ली के मुगल शासकों में जहाँगीर के शासन काल में बने चित्र सबसे उत्कृष्ट है। मुगल शासक जहाँगीर चित्रकला का बहुत प्रेमी था। अवध के चित्रों और मुगलों के समय बने चित्रों में कुछ भिन्नता है। यह अन्तर ही दोनों शैलियों की पहचान करने में मदद करती है। अवध के चित्रकारों ने चित्रों में जो किनारा बनाया है, वह मुगल शैली से ही प्रभावित है। अधिकांश चित्रकारों ने मुगल शैली में ही चित्रों को बनाना सीखा था और बहुत से चित्रकार मुगल राजदरबार दिल्ली को छोड़कर अवध में आये थे। इसीलिए इन चित्रों में मुगल शैली की छाप दिखाई पड़ती है। अवध के चित्रकारों ने चित्र में जो किनारा बनाया है उसकी चौड़ाई कम रखी है अवध के नवाबों की तरह यहाँ के चित्रकार भी प्राकृतिक सौन्दर्य के बहुत प्रेमी थे। चित्र में फूल–पत्तियों का प्रयोग उचित अनुपात में किया गया है। जिन फूल–पत्तियों का प्रयोग चित्र में किया गया, उन्हें अवध के चित्रकारों ने सुन्दरता की दृष्टि से किया है। चित्रों में जिस तरह की रेखाओं से फूलों को बनाने में सुन्दरता और आकर्षण बढ़ रहा हो उसी का प्रयोग किया गया है।

यूरोपीय चित्रकारों के अवध में आने से स्थानीय चित्रकार उनके सम्पर्क में आये। यूरोपीय चित्रकारों में बहुत से चित्रकार व्यक्ति चित्रण से प्रभावित थे, इस समय अवध में व्यक्ति चित्रण को बढ़ावा मिला। अवध के चित्रकारों ने शबीह चित्रों में सिर के पृष्ठ भाग में प्रभामण्डल का चित्रण किया है। एक ऐसा ही चित्र सफदरजंग का है जिसमें उनके सिर के पीछे प्रभामण्डल का चित्र बना हुआ है। इस तरह के चित्रों को देखने से ऐसा प्रतीत होता हैं कि भारत में प्रभामण्डल वाले चित्र हिन्दू देवी–देवताओं और बुद्ध जी के अधिकांश बने हुए है। अवध नवाबों का शासनकाल धार्मिक सहिष्णुता का रहा है।

धार्मिक आधार पर किसी प्रकार का भेद–भाव अवध नवाबों के द्वारा नहीं किया जाता था। इस चित्र से विदित होता है कि अवध नवाब सफदरजंग उदार प्रवृत्ति के थे और उनमें अन्य धर्मों के प्रति आस्था थी। अवध के स्थानीय चित्रकारों पर यूरोपीय शैली का प्रभाव पड़ा। मीर कलन खाँ मुगल और यूरोपीय शैली के चित्र बनाने में निपुण थे, इन शैली के चित्रों को एक साथ और आवश्यकता पड़ने पर अलग–अलग शैली में चित्रों को बनाने में मीर कलन खाँ सिद्धहस्त थे। अवध के चित्रकारों ने अपने चित्रों को हर सम्भव प्रयास किया है कि उसे सुन्दर रूप में चित्रित करे। चित्रकारों ने इस कार्य में बहुत सीमा तक सफलता भी प्राप्त की। अवध नवाब सफदरजंग दिल्ली और अवध के राजनीतिक क्रिया–कलापों में ही अधिक उलझे रहे, जिससे उनके शासनकाल में ललित कलाओं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

का विकास समुचित रूप से नहीं हो सका।

अवध में नवाबी शासन के अन्तर्गत जब सआदत खाँ की मृत्यु के बाद सफदरजंग गद्दी पर बैठे, तो उन्होंने सर्वप्रथम अवध राज्य में व्याप्त अशान्ति को समाप्त कर प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप देने में व्यस्त रहें। इनके शासनकाल में संगीत और नृत्यकला की बहुत प्रगति तो नहीं हो सकी, परन्तु सफदरजंग को भी संगीत से लगाव था वह भी संगीत सुना करते थे। सफदरजंग के शासनकाल में यदि शान्ति व्यवस्था स्थापित होती, तो संगीत के साथ ही अन्य ललित कलाओं का समुचित विकास होना सम्भव दिखाई देता हैं। सफदरजंग स्वयं संगीत के जानकार थे।

संगीत की गुनगुनाहट तो हर किसी को प्यारी लगती हैं। यह अवश्य है कि समय परिस्थिति के कारण व्यक्ति उससे किनारा कर लें। सफदरजंग भी राजकीय कार्यों से समय मिलने पर संगीत का आनन्द लेता था, जिससे उसके शरीर की थकान मिट सके और स्वयं को तरोताजा महसूस कर सकें। वह फिर अपने अगले दिनों के कार्यों को समुचित रूप से कर सकें। अवध के नवाब सफदरजंग के शासनकाल में अवध राजदरबार में अनेक शायरों ने आश्रय प्राप्त किया था। जिनमें प्रमुख रूप से सैय्यद गुलाम अली बिलग्रामी 'मुहिब', मिर्जा आजमी असफहानी, मिर्जा अजीमा 'अकसीर', मिर्जा इब्राहिम नूर, हिदायत अली खाँ जमीर, मिर्जा अबू अली 'हातिफ' मिर्जा अब्दुल रजा 'मतीन', मरदान अली खाँ 'मुबतिला', मिर्जा बाकर 'हकीर', मीर मुहम्मद इस्माईल 'कुरबानय और राजा नवल राय 'वफा' थे। अवध नवाब सफदरजंग का राजदरबार शायरों से सुसज्जित था।

सफदरजंग ने अपने राजदरबार से सम्बन्धित शायर राजा नवलराय को अच्छें पदों पर नियुक्त किया था। सफदरजंग जब अवध राजदरबार से अनुपस्थित रहते थे तो अवध प्रशासन की जिम्मेदारी राजा नवलराय की ही देखरेख में होती थी। राजा नवलराय को महल में आने–जाने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। अवध शासक सफदरजंग को उनके ऊपर पूर्ण रूप से विश्वास था। राजा नवलराय एक कुशल प्रशासक और राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ कुशल शायर भी थे। राजा नवलराय 'वफा' उपनाम से शायरी करते थे। राजा नवलराय कलम और तलवार दोनों से समृद्धशाली थे, इन्होंने रूहेलों को अवध से बाहर खदेड़ दिया था। फर्रूखाबाद के नवाब अहमद खाँ बंगश से युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए, नवलराय की मृत्यु के बाद उनके सैनिक भागने लगे।

अवध के नवाबी शासकों के शासनकाल में नृत्य और संगीत की प्रगति हुई थी। अवध के प्रथम दो नवाबों के समय में विशेष उन्नति तो नहीं कर सकी, फिर भी इनके समय में नृत्य और संगीत अपने रूप में प्रचलित रही। अवध नवाबों के समय में नृत्य, संगीत को प्रभावी बनाने में वाद यन्त्रों का भी बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

अवध में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों के आपसी तालमेल से संगीत के विकास को गति मिला। अवध नवाबों के शासनकाल में संगीत अवधी भू–भाग में मधुरता के साथ बढ़ती चली गई। ईरानी संगीत का महत्व भी बढ़ रहा था जिसका प्रमुख कारण अवध के शासक ईरान के शिया मुसलमान थे। ईरानी संगीत में कव्वाली बहुत ही मशहूर थी। अवध के नवाबी शासकों में उत्तरोत्तर संगीत और नृत्य का दायरा बढ़ता चला गया। बाद के कुछ शासकों में तो नृत्य और संगीत का क्षेत्र इतना अधिक बढ़ गया कि वे विलासी प्रवृत्ति के हो गए। अवध के दूसरे शासक सफदरजंग ने संगीत और नृत्य की अपेक्षा अवध राज्य की सीमाओं की तरफ अधिक ध्यान दिया।

अवध के प्रथम शासक सआदत खाँ और उसकी पत्नी खजीदा बेगम के एक पुत्री थी जिसका नाम सद्र–ए–जहान था। सआदत खाँ बुरहान–उल–मुल्क ने उसका विवाह सफदरजंग के साथ कर दिया था। सद्र–ए–जहान अवध की पुत्री होने के साथ ही अवध की बहू भी बन गई। सद्र–ए–जहान नवाब बेगम के नाम से मशहूर हुई। नवाब बेगम एक बुद्धिजीवी और चालाक स्त्री थी उनका राज और रूतबा लम्बे समय तक कायम रहा, जिसका मूल कारण उनके पिता सआदत खाँ बुरहान–उल–मुल्क अवध के शासक रहें, उनकी मृत्यु के बाद नवाब बेगम के पति सफदरजंग अवध के शासक बने। सफदरजंग के शासनकाल में नवाब बेगम ने एक स्वप्न देखा था, जिसमें एक वृद्ध व्यक्ति से उन्होंने प्रश्न किया कि आप कौन हैं। उस वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया कि तुम्हारे गर्भ में बेटा हैं, उसका किस्मत देख रहा हूँ। इस तथ्य की पुष्टि करना बहुत ही कठिन हैं, परन्तु नवाब बेगम को शुजाउद्दौला के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी।

सफदरजंग ने अपने राजदरबार में विद्वानों को आश्रय प्रदान किया था। उसे भी साहित्य से लगाव था और कवियों का सम्मान करता थ। सफदरजंग एक दयालु और उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था। ऐसा उल्लेख मिलता है कि जब कोई दीन–हीन व्यक्ति उससे मदद के लिए गुहार लगाता था, तो वह उसे पचास अशर्फिया सहायता के लिए प्रदान करता था। सफदरजंग नैतिक रूप से उच्च व्यक्ति था उसने केवल एक विवाह किया था। उसने अवध के अन्य नवाबों की भाँति अनेक विवाह नहीं किये और न ही उसके पास अनेक दासियाँ और वैश्यायें थी। उसको अपनी पत्नी नवाब बेगम से अथाह मुहब्बत थी। सफदरजंग शिया मुसलमान होते हुए भी अवध के भू–भाग में शासन करते हुए हिन्दू और मुस्लिम का भेद–भाव नहीं किया था।

हिन्दू पदाधिकारी राजा नवलराय सफदरजंग के सर्वाधिक विश्वसनीय पदाधिकारी थे। सफदरजंग अवध का सम्पूर्ण कार्यभार अपने अनुपस्थिति में राजा नवलराय को ही सौंपता था। सफदरजंग एक सामान्य दर्जे के प्रशासक थे। वह अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किसी से मित्रता कर लेता था और अपने हितों की पूर्ति के पश्चात् किसी से विमुख हो जाने में उसे देर नहीं लगती थी। वह दिल्ली के मुगल राजदरबार में वजीर के पद पर भी कार्य किया था।

सफदरजंग अवध और दिल्ली के राजनीतिक गतिविधियों में ही अधिक व्यस्त रहा। वह अवध की अपेक्षा दिल्ली में रहना अधिक पसन्द करता थ। अवध का सूबेदार नियुक्त होने के पश्चात् वह अवध के भू–भाग में फैले हुए अशान्ति को समाप्त कर शान्ति व्यवस्था स्थापित करने में लगा रहा। राजनीतिक गतिविधियों की उलझनों में व्यस्त रहने के कारण पर्याप्त समय सफदरजंग को नहीं मिल सका, जिससे वह ललित कलाओं की तरफ ध्यान दे सकें। सफदरजंग संगीत और नृत्य का प्रेमी था, परन्तु उसके शासनकाल में ललित कलाओं का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

विकास अधिक न हो सका। सफदरजंग ने शासनकाल के उपरान्त अवध के शासकों के समय में ललित कलाओं का विकास अधिक हुआ। अवध और दिल्ली के राजनीतिक उहापोह के बीच सफदरजंग की मृत्यु जनपद सुल्तानपुर में बेलहारी के निकट गोमती नदी के पास स्थित पापड़घाट पर हो गयी। परिपूर्णानन्द वर्मा के अनुसार– "सफदरजंग का शासनकाल सुख और शान्ति का था।" राज्य में अच्छी शासन व्यवस्था होने पर अर्थव्यवस्था की गति उच्च होती है। जनता की आर्थिक स्थिति अच्छी और राज्य में शान्ति होने से चौमुखी विकास होता है जिसमें कला भी शामिल होती है। जनता की समृद्धि राज्य में शान्ति और सुख का आधार होती है। नवाब सफदरजंग का शासनकाल तुलनात्मक रूप से अच्छा एवं शान्तिपूर्ण था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, डॉ0 उर्मिला, अवध का नवाबी युगीन हिन्दी कथा–साहित्य, पृ0 19.
2. नेशापूरी, कासिम अली, शाहिय्य–ए–नेशापूरिया, अनुवादक प्रो0 शाह अब्दुस्सलाम, पृ0 36–37.
3. नाहीद, नुसरत, लखनऊ संस्कृति के रंग, पृ0 132.
4. सिंह, डॉ0 रीना, अवध की चित्रकला, पृ0 40.
5. सहाय, डॉ0 जगदीश, अवध में नवाबी शासन का इतिहास, पृ0 224.
6. सिंह, डॉ0 रीना, अवध की चित्रकला, पृ0 74.
7. वही, पृ0 84.
8. बेगम, रेहाना, अवध के सामाजिक जीवन का इतिहास (1720–1819 ई0), पृ0 23.
9. सीताराम, लाला, अयोध्या का इतिहास, पृ0 156.
10. भसीन, राकेश, दास्तान–ए–अवध, पृ0 41.
11. पाण्डेय, नीलिमा, लखनऊ शहर कुछ देखा–कुछ सुना, पृ0 28–29.
12. सावंत, रघुवंश दयाल, जिसको न दे मौला.... आसफद्दौला, पृ0 7.
13. सहाय, डॉ0 जगदीश, अवध में नवाबी शासन का इतिहास, पृ0 51–52.
14. वर्मा, परिपूर्णानन्द, वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन, पृ0 4.

*****